SHODH SAMAGAM
Online ISSN : 2581-6918

''माध्यामिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन।''

डॉ. मधु अग्रवाल, प्राचार्या
सेन्ट्रल कॉलेज ऑफ एजुकेशन,मंदिर हसौद, रायपुर (छ.ग.)

सारांश :–

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन किया गया । आत्मविश्वास मापनी हेतु डॉ. डी. डी. पाण्डेय द्वारा तैयार आत्मविश्वास परीक्षण किया गया। अध्ययन से पता चलता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नही पाया गया।

प्रस्तावना :–

व्यक्ति के अंदर बहुत सी मानसिक शक्तियॉ होती है ये मानसिक शक्तियॉ, आंतरिक क्रियाओं को जन्म देती है। कोई भी दो व्यक्ति समान व्यक्तित्व के नही होते, फलस्वरुप प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से अपने वातावरण के साथ समायोजन करता है और यही उसके व्यक्तित्व का निर्धारण करता है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति को एक निश्चित पहचान होती है और इसी पृथक पहचान के कारण ही व्यक्ति में आत्मविश्वास पाया जाता है।

सम्बन्धित शोध अध्ययन :–

1. लेनी ऐलेन–1997 ''**महिलाओं में आत्मविष्वास का अध्ययन।**''

निष्कर्ष–महिलाओं में पुरुषों की अपेक्षा कम आत्मविश्वास प्रायः सभी क्षेत्रों में होता है। साहित्य से यह पता चलता है कि यद्यपि कम आत्मविश्वास वास्तव में एक बार और संभवतः कई बार कम नही रहे है। उनमें आत्मविश्वास पुरुषों की अपेक्षा कम है और अन्य स्थितियों में उपलब्धि अधिक है।

2. एस. प्रिन्स–1998 ''**ब्रिटिश कार्यकर्ताओं के आत्मविश्वास का अध्ययन।**''

निष्कर्ष– स्वचालित कम्पनी में काम करने वाले कार्यकर्ताओं को कम लाभ मिलने के कारण उनके आत्मविश्वास में कमी पायी गयी है और ये कार्यकर्ता में मृत्यु दर में वृद्धि पायी गई है।

3. माईकल रासेल–2006 ''**शिक्षा में आत्मविश्वास का अध्ययन।**''

निष्कर्ष– शिक्षा में आत्मविश्वास है वो भय के कारण व्यक्तित्व रवैया संचार कुशल कम शिक्षित कम आत्मसम्मान ये समस्याएँ है जिसके कारण विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति आत्मविश्वास होता है।

समस्या कथन :–

''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्मविष्वास का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्मविष्वास का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मविष्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

1. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियो के आत्मविश्वास एवं अनुसूचित जनजाति के आत्मविश्वास मे सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा ।
2. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के छात्र व छात्राओ के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा ।
3. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के छात्र व छात्राओं के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा ।
4. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के छात्रों व अनुसूचित जनताति के छात्रों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर पाया जायेगा।
5. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के छात्राओं व अनुसूचित जनजाति के छात्राओं में सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा।

अध्ययन के क्षेत्र एवं परिसीमन :–

1. प्रस्तुत लघु शोध के लिए रायपुर जिले को लिया गया है।
2. शोध के लिए माध्यमिक स्तर के विद्यालय का चयन किया गया है।
3. अध्ययन हेतु रायपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र को चुना गया है।

4. अध्ययन हेतु कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
5. अध्ययन हेतु अनुसूचित जाति के 60 तथा अनुसूचित जनजाति के 60 अर्थात कुल 120 विद्यार्थियों को लिया गया है।

अध्ययन के लिए प्रयुक्त उपकरण :-

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा डॉ. डी. डी. पाण्डेय द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ो का विश्लेषण :-

''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का आत्मविश्वास तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।''

अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का मध्यमान, प्रमाप विचलन व टी-मूल्य की सारणी :-

सारणी क्रमांक

जाति	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य
अनुसूचित जाति	60	35.53	7.38	1.32
अनुसूचित जनजाति	60	33.85	6.64	सार्थक नही है।

व्याख्या :-

इस सारणी में स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का मध्यमान 35.53 तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का मध्यमान 33.85 आया। अतः अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का मध्यमान ज्यादा है तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के आत्मविश्वास का प्रमाप विचलन क्रमशः 7.38 तथा 6.64 है।

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों का आत्मविश्वास के मध्यमान में सार्थक अन्तर की सार्थकता के लिए टी-मूल्य की गणना की गई। जिसका टी-मूल्य 1.32 आया, जिसके 118 df पर 0.05 स्तर का टेबल मूल्य 1.98 तथा 0.01 स्तर का टेबल मूल्य 2.62 है जो कि गणना मूल्य 1.32 से अधिक है।

अतः परिकल्पना ''अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।''

अतः परिकल्पना की पुष्टी होती है। इसी प्रकार अन्य परिकल्पनाओं की पुष्टि की गई।

परिणाम :–

1. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का आत्मविश्वास व अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।

निष्कर्ष :–अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास ने सार्थक अन्तर नही पाया गया।

2. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के छात्र व छात्राओं के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।

निष्कर्ष :–अनुसूचित जाति के छात्र व छात्राओं के आत्मविश्वास ने सार्थक अन्तर नही पाया गया।

3. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के छात्र व छात्रों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।

निष्कर्ष :–अनुसूचित जनजाति के छात्र व छात्राओं के आत्मविष्वास में सार्थक अन्तर नही पाया गया।

4. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों में सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।

निष्कर्ष :–अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों में आत्मविष्वास में सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।

5. माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्राओं के आत्मविश्वास के मध्य सार्थक अन्तर नही पाया जाएगा।

निष्कर्ष :–अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्राओं के आत्मविष्वास में सार्थक अन्तर नही पाया गया।

सुझाव :–

1. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के अलावा आवश्यक वस्तुएं जैसे– पुस्तक, कॉपी और अन्य पाठ्य पुस्तक दी जानी चाहिए।
2. विद्यालयों में विद्यार्थियों को विषय एवं व्यवसाय के चयन हेतु उनकी योग्यता के अनुसार उचित मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए।
3. शिक्षकों को विद्यार्थियों के सामाजिक दशाओं के प्रति व्यक्तिगत रुप से ध्यान देना चाहिए।

4. विद्यार्थियों को विद्यालयीन प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय के महत्व से अवगत कराना चाहिए।
5. विद्यार्थियों को उनकी रुचि योग्यता के अनुसार मार्गदर्शन करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

श्रीमती शर्मा आर. के., माध्यमिक शिक्षा और अध्यापन कार्य, राधा प्रकाशन मन्दिर आगरा पंचम संस्करण 2001

डॉ. मंगल अंशु, डॉ. बरौलिया ए., शैक्षिक अनुसंधान की विधियॉं एवं शैक्षिक सांख्यिकी नवीनतम संस्करण राधा प्रकाश आगरा

डॉ. सिंह रामपाल डॉ. शर्मा ओ. पी., शैक्षिक अनुसंधान, नवीनतम संस्करण विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2

डॉ. माथुर एस. एस., शिक्षा तथा माध्यमिक शिक्षा, नवीनतम संस्करण विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

डॉ. रैना रीता भार्गव राखी, शैक्षिक मापन एवं सांख्यिकी, राखी प्रकाशन आगरा द्वितीय संस्करण 2006

डॉ. सरीन शशिकला, चतुर्थ संस्करण 2006,

डॉ. सरीन अंजनी, शैक्षिक अनुसंधान तथा विधियॉं, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2

****